दिल्ली के इठलाते पक्षी

लेखः थॉमस एल. वॉली, फोटोः स्यान सी. मलॉनी

हमेशा से मैं कुछ-कुछ प्रकृतिवादी हूं- बेशक सिर्फ शौकिया ही। मेरी दिलचस्पी वृक्षों और झाड़ियों में ज्यादा रही है बनिस्बत पक्षियों के। लेकिन जब मैंने सुना कि हमें भारत भेजने की तैयार हो रही है तो मुझमें कुतूहल जाग उठा। मैं उत्तरी समशीतोष्ण कटिबंध क्षेत्र में पला-बढ़ा और हमेशा इसी क्षेत्र में रहा। भारतीय उप-महाद्वीप के बारे में सुना था कि वहां आकर्षक पेड़-पौधों की भरमार है। आश्चर्यचकित कर देने वाले पक्षियों की क्या बात करें, वे तो नए और दिलचस्प होंगे ही। मुझे सबसे ज्यादा कुतूहल हूपू यानी हुदहुद में था। यह चिड़िया रोमांस, जीवट और मेरे हिसाब से कुछ अनोखापन लिए है। हुदहुद (युपूपा इपोप्स) उतनी ही बड़ी होती है, जितना बड़ा एक छोटा कौआ। भूरे-काले-सफेद रंग का अनोखा मेल इसे आकर्षक बनाता है। लंबी सीधी चोंच घास खोदकर कुछ खाने के काम आती है और शरीर सीधा तना हुआ होता है। इसके अलावा बालों का मुकुट जो जापानी फोल्ड हो सकने वाले पंखे की तरह लगातार खुलता है, फिर बंद हो जाता है। तो मैं हुदहुद की तलाश में हूं पर कहां खोजूं?

पहली चीज तो यह थी कि इसके ठिकानों का पता लगाया जाए। पक्षियों की कुछ जरुरतें होती हैं- वहां खाना होना चाहिए। अपनी प्रजाति के मुताबिक पक्षी तमाम तरह की चीजें खाते हैं। लेकिन हुदहुद की तलाश में इससे खास मदद नहीं मिली। उन्हें औरों के मुकाबले ज्यादा पानी की जरुरत होती है। ठिकाने के लिए उन्हें घोंसला बनाने की सुविधा और बचाव का इंतजाम चाहिए। इसका मतलब है वे किसी तरह के पौधों में अपना घर बनाएं। हालांकि कुछ को चट्टानों के ऊपरी हिस्से और पुराने किलों की दीवारें पसंद आती हैं। उन्हें अपनी जैसे दूसरे पक्षियों का साथ भी चाहिए, मेल-मिलाप के लिए।

नई दिल्ली में इस तरह के कई ठिकाने हैं, जहां ये पक्षी इठला सकते हैं।

भारत की तमाम खूबियों में से एक यह है कि यहां बड़े शहरों में भी सुबह की सैर के वक्त आप खुशगवार सौंदर्य से रुबरु हो सकते हैं, बशर्ते आपकी नजर अपने आस-पास इतराते पक्षियों को देख पाए।

ऊपर: नई दिल्ली में अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फोर्ड के आवास रुजवेल्ट हाउस में बैंगनी रंग का शकरखोरा।

बिल्कुल बाएं से दाएं: सामान्य हुदहुद (लोदी गार्डन), ब्राह्मिणी मैना और मालचा मार्ग के एक पार्क में कॉपरस्मिथ बार्बेट (बसंता)।

यहां बहुत से पार्क हैं, कुछ वाकई बड़े हैं। फिर दिल्ली में रिज है, जो कमोबेश अपनी प्राकृतिक अवस्था में ही है। यह रिज एक तरह से जंगल है जिसमें झाड़ियां हैं। यहां आपको पक्षियों की कई प्रजातियां दिख सकती हैं। यमुना नदी है, जो हालांकि बुरी तरह प्रदूषित है, फिर भी इसकी धारा और दोनों किनारों पर कई तरह के पक्षियों का बसेरा होता है- खास तौर पर सर्दी में। चिड़ियाघर है, जिसमें घरेलू और प्रवासी पक्षियों की आकर्षक शृंखला है। पूरे शहर में मकबरे हैं, बहुत सारे गोल चक्कर हैं, छोटे हरे-भरे इलाके हैं जहां किसी चिड़िया के लिए खाना और बसेरा मिल जाता है। और आखिर में हम घरों के पिछवाड़े का जिक्र कर सकते हैं, जिनमें छोटी झाड़ियां, शायद कोई वृक्ष, या बाग भी हो सकता है और पक्षियों के लिए पानी में उछलकूद करने की सुविधा भी हो सकती है। नई दिल्ली में वास्तव में पक्षी देखने के बहुत से मौके हैं।

टहलने निकलिए और देखिए कि कहीं आपके आस-पास कोई हुदहुद तो नहीं। लोधी गार्डन जाइए। जोरबाग की तरफ से शुरु कीजिए, सुबह बहुत जल्दी जब आसमान साफ होता है और जब ज्यादा गर्मी नहीं होती। दरवाजे से निकल जाइए और कुछ गज चलिए। दाएं हाथ की तरफ देखिए। लंबे वृक्ष दिख रहे हैं? यह होर्नबिल यानी धनेष चिड़ियाओं का इलाका है। एक बार मैंने गार्डन रेस्टोरेंट में मजेदार लंच का आनंद लिया था और तीन भारतीय भूरी धनेष चिड़ियाओं को उड़ना सीखते देखा था- ऊपरी शाखाओं पर उछल-कूद करती हुई। अब बाईं तरफ नजर दौड़ाएं। वहां आपको इधर-उधर बांस के कई झुरमुट दिखेंगे। जमीन की ओर देखिए। सरपट भागने और चहचहाने की आवाज सुनिए। ये जंगली बैबलर हैं जो खाते हुए एक-दूसरे से संवाद में भी मशगूल हैं। वे कभी चुप नहीं बैठते। उन्हें हिंदी में सात भाई का नाम दिया गया है जो बहुत उपयुक्त है। अब थोड़ा ऊपर देखिए। बांस के बीच के हिस्सों में बहुत-सी बुलबुलों के होने की संभावना है, लाल पंखों वाली और लाल बालों के समूह वाली- एक शाखा से दूसरी शाखा की तरफ जाते हुए, एक-दूसरे को पुकारते हुए। वहां शायद घरेलू गौरेया भी हैं, वही घरेलू भूरी चिड़िया जो हमें वाशिंगटन डी. सी. और लंदन में भी दिखती है। अगर नसीब हुआ, तो हम एक पेड़ में छिपे उल्लू भी देख सकते हैं।

आप यदा-कदा घूमने वाले हों या अनुभवी पक्षी-प्रेमी, वृक्षों के तनों में आपको गुलाबी गोल घेरे वाले तोते देखने को मिल सकते हैं।

नई दिल्ली के अमेरिकी दूतावास के आवासीय परिसर में गुलाबी घेरे वाले तोते (मादा घोंसले में और नर बाहर)।

थोड़ा-सा और आगे चलिए और यह इलाका एक लॉन में खुलेगा जहां बहुत सी झाड़ियां हैं। यहां मैना हैं, सामान्य और ब्राह्मणी। जमीन पर फुदकती हुईं, खाने की तलाश में। शायद लोगों द्वारा छोड़ी गई किसी खाने-पीने की चीज की तलाश में होंगीं। ये झाड़ियां सीधी चोंच वाली बया और उसकी साथी छोटी, हरी और भूरी चिड़ियाओं की तलाश का ठिकाना है। सीधी चोंच इन्हें घोंसले की सिलाई में मदद करती हैं। पत्तियों के रंग और सफेद आंखों वाली एक और चिड़िया के आंखों के इर्द-गिर्द एक सफेद घेरा होता है। ये दोनों ही घरेलू गौरेयाओं से छोटी होती हैं। इनमें से किसी को देखने के लिए आपको बहुत करीब से देखना पड़ेगा। आगे वहां मकबरे को देखिए। उम्मीद है कि आपको दीवार पर या इधर-उधर शोर मचाता हुआ तेजी से उड़ता हुआ गुलाबी गोल घेरे और लंबी पूंछ वाला छोटा तोता मिलेगा। वह हरा है, पर उसकी गर्दन के पास एक गुलाबी रंग की अंगूठी-सी बनी हुई है। उसकी चमकदार लाल चोंच है। अगर आप उसे किसी दीवार के सामने देखें, तो उसकी पूंछ नीली दिखेगी। आप लगभग पक्के तौर पर नीले कबूतर देखेंगे। जब भी आप बाहर निकले होंगे, आपने उनमें से कुछ

शौकिया पक्षी–प्रेमी

भारत में पक्षियों की करीब 1300 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें अफ्रीका और उत्तरी यूरोप से आने वाली मौसमी प्रवासी प्रजातियां भी शामिल हैं। ये प्रजातियां दुनियाभर के पक्षी-प्रेमी पर्यटकों को भारत के अभयारण्यों और पक्षीविहारों में खींच लाती हैं। ज्यादातर विदेशी पर्यटक और शायद भारतीय भी, नहीं जानते कि भारतीय शहरों में सड़कों के किनारे उगी झाड़ियों और वृक्षों में हर दिन ऐसे सुंदर पक्षियों को देखा जा सकता है जो दूसरे देशों में केवल चिड़ियाघरों में ही मिल सकते हैं। अमेरिका में लोगों को चीलें बस आकाश में उड़ते बिंदुओं के रूप में ही दिख पाती हैं। अमेरिकी शहरों में रहने वालों के लिए इन क्रुद्ध आंखों वाले पक्षियों को व्यस्त भारतीय सड़क के करीब छोटे मैदान में पाइप से टपकते पानी को पीते देखना एक अभूतपूर्व अनुभव है।

लेकिन पक्षियों को देखने के शौक में बहुत से भारतीय शामिल हैं। बर्ड वाचिंग क्लबों के सदस्य भोर से ही पेड़ों पर आंखें गड़ाए टहलने लगते हैं। ऑन-लाइन चैट समूह किसी विशेष पक्षी के दिखने की खबरों का आदान-प्रदान करते हैं और पक्षियों के खुद खींचे फोटो सबको दिखाने को आतुर फोटोग्राफर भारत के कई बड़े शहरों में देखे जा सकते हैं।

वेबसाइट kolkatabirds.com शौकिया और व्यावसायिक स्थानीय फोटोग्राफरों के खींचे पक्षियों के चित्रों का बहुत बड़ा संग्रह है। इस पर आपको एक करोड़ 20 लाख की जनसंख्या वाले इस शहर में पाई जानेवाली पक्षियों की 250 प्रजातियों को निहारने के सटीक स्थानों के बारे में भी जानकारी मिल सकती है। इस वेबसाइट के अनुसार टॉलीगंज गोल्फ क्लब का क्षेत्र, ईडन गार्डन और जोधपुर पार्क के पोखर और साल्ट लेक का दलदल पक्षियों की निहारने के लिए बहुत सही जगहें हैं।

इंडिया हॉटस्पॉट्स साइट जैसे http://wwwcamacdonald.com/birding/asiaindia.html पर फोटो, नक्शे, पक्षियों के दिखने की खबरें, किताबें और सरकारी संदर्भों की जानकारी और बेंगलूर बर्ड्स (http://groups.yahoo.com/group/bngbirds/) जैसे चैट ग्रुप से जुड़ने की सुविधा हैं। पक्षियों को देखने का एक और ठिकाना टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च है। मुंबई के वेब पेज (http://theory.tifr.res.in/bombay/) पर यहां के भौतिक वैज्ञानिक सौरेंदु गुप्ता के भारत के बड़े शहरों में दिखने वाले शकरखोरे का काव्यात्मक वर्णन देख सकते हैं। ''चमचमाते नीले या गहरे हरे रंग के ये दमकते नन्हे पंछी अक्सर फूलों पर मंडराते दिखते हैं और इसलिए लोग इन्हें मर्मर पक्षी यानी हमिंग बर्ड्स समझ लेते हैं।'' सौरेंदु जब ब्रह्मांड के जन्म के समय के तापक्रम या क्वार्क पदार्थ की गुत्थियों से माथापच्ची नहीं कर रहे होते तो उन्हें कभी-कभी, साल में एक बार, तरह-तरह के पक्षियों को देखने के लिए बाहर निकल पड़ना बहुत आराम और राहत देता है। वह कहते हैं, ''मैं पक्षी विशेषज्ञ नहीं हूं, अक्सर समूह में जाता हूं। हम लोग मुंबई के शौकिया पक्षीप्रेमी हैं जिन्हें पक्षियों को देखने का शौक है।'' □

http://www.kolkatabirds.com

Birds of Kolkata

को हमेशा देखा होगा– सर्दी में या गर्मी में, बरसात में या धूप में। कबूतर की कुछ और प्रजातियां भी देखने को मिलेंगीं। अपनी टोपी को सहेज कर रखिए। जब मेरी पत्नी ने घोंसले के बहुत करीब जाने की कोशिश की तो एक कौए ने उस पर झपट्टा मार कर हमला कर दिया। घरेलू कौआ सामान्य कौए के मुकाबले आक्रामक, शोर मचाऊ और बहुत जिद्दी होता है और व्यावहारिक रुप से सर्वभक्षी होता है।

थोड़ा ऊपर देखें। आपको बीच हवा में तैरती चील दिख सकती है। उसकी अंग्रेजी के वी अक्षर जैसी पूंछ या तो फैली हुई होगी या चिपकी हुई। उसके पंख कुछ फैले हुए होते हैं जिनसे वह अपनी उड़ान को नियंत्रित करती है।

बांई तरफ वृक्षों की एक खुली वाटिका है। मध्यम ऊंचाई के पक्षियों के लिए एकदम ठीक। नसीब ठीक हुआ, तो आप एक वाकई शानदार नजारा देख सकते हैं– सुनहरी पीठ वाला कठफोड़वा पेड़ के तने पर चढ़ता हुआ, कीड़ों की तलाश करता हुआ और फिर अगले पेड़ पर पहुंचता हुआ। जब आप चलते हैं तो कॉपरस्मिथ बार्बेट यानी थथेरा बसंत नामक पक्षी की टोंक-टोंक-टोंक सुन सकते हैं। वह पास में टिन पर ठक-ठक कर रहे कारीगर की नकल करता प्रतीत होता है। मैंने एक बार गिनती की और छह सेकंड में दस टोंक-टोंक सुनी थीं। फिर वहां उसका हरे रंग का चचेरा भाई है जो पूरा हरा नहीं है क्योंकि उसका बड़ा भूरा सिर है जो उसकी पूंछ के करीब आधे हिस्से तक जाता है। वह जोर से लगातार पुकारता है– कुटू कुटू। क्या आपको पता है कि पक्षियों को इस तरह की आवाज निकालने के लिए सांस को अंदर नहीं खींचना पड़ता। उनमें हवा लगातार अंदर-बाहर होती रहती है।

अब हम देखें कि क्या हम किसी पक्षी को देखना भूल गए? हां, अगर नसीब हो तो हम कुछ जांघिल और सफेद जलसिंह भी देख सकते हैं, चिड़ियाघर की तरफ उड़ते हुए जो यहां से बहुत दूर नहीं है। या कुछ खंजन पक्षी जो पानी के किनारे अपनी पूंछ को ऊपर-नीचे करते रहते हैं। या हम कुछ लाल सेल्विया फूल हासिल कर सकते हैं। बैंगनी रंग के शकरखोरा देख सकते हैं जो मिलन की तैयारी में हों। ये सब बहुत शानदार दृश्य हैं। लेकिन मैंने कभी हुदहुद को नहीं देखा, शायद, अगली बार सफलता मिले। □

बिल्कुल बाएं: नर्द दिल्ली के अमेरिकी दूतावास परिसर में उल्लुओं का एक जोड़ा।
बाएं: नई दिल्ली के मालचा मार्ग के पार्क में पूर्वी नीलकंठ।

लेखक और फोटोग्राफर: *थामस एल.वॉली और स्यान सी. मलॉनी नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में कम्युनिकेशन ऑफिसर हैं।*